भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
जी.टी. रोड, रावतपुर, कानपुर – 208 002
(उत्तर प्रदेश)
An ISO 9001:2015 Certified

(O) : (0512) 2533560, 2554746
Fax : (0512) 2533560, 2554746
Website : http://atarik.res.in
E-mail : zpdicarkanpur@gmail.com

दि. 17–06–2020

फार्मर फर्स्ट परियोजना की वार्षिक समीक्षा कार्यशाला

आज दि. 17 जून 2020 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा देश के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों द्वारा संचालित इस परियोजना की वार्षिक 2 दिवसीय समीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन डा. त्रिलोचन महापात्र, महानिदेशक, भा.कृ.अनुप.–नई दिल्ली द्वारा किया गया। कार्यशाला में डा. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक, भा.कृ.अनुप.–नई दिल्ली, डा. वी.पी. चहल, सहायक महानिदेशक, भा.कृ.अनुप.–नई दिल्ली, डा. ए.के. सिंह, निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, डा. अतर सिंह, निदेशक, अटारी, जोन–3, कानपुर सहित देश के 10 जोन अटारी के निदेशक एवं भा.कृ.अनुप. की विभिन्न संस्थाओं के परियोजना समन्वयकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला के शुभारम्भ में अपने उद्बोधन में महानिदेशक, भा.कृ.अनुप.–नई दिल्ली ने इस परियोजना के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस योजना को 5 वर्ष पूरे हो चुके हैं। प्रमुख रूप से कृषि विश्वविद्यालयों एवं भा.कृ.अनुप. की संस्थाओं को किसानों की आय संवर्धन का दायित्व इस परियोजना में निश्चित किया गया है। सन् 2022 तक किसानों की आय दुगनी कैसे हो ऐसे कृषि विकास के मॉडल, तकनीकी हस्तांतरण, अवस्थापना सुविधाओं का विकास, आर्थिक रूप से लागत एवं प्राप्त आय का विश्लेषण, एफ.पी.ओ. (किसान उत्पादक संगठन) के माध्यम से मार्केटिंग की व्यवस्था आदि को दृष्टिगत रखते हुए कार्ययोजना पर काम करने की जरूरत है। क्षेत्र विशेष के लिये कौन सी तकनीकी अपनायी जानी चाहिए, इसकी पहचान किसान और शोधकर्ताओं के बीच स्पष्ट होनी चाहिए। तदानुसार ही तकनीकी प्रयोग में लायी जानी चहिए। उत्पादकता बढ़ाने के साथ–साथ किसान की आय अधिक प्राप्त हो एवं लागत कम से कम हो ऐसे अनुसंधान से नतीजे निकलने चाहिए।

किसानों की दोगुनी आय प्राप्त करने हेतु उपलब्ध माडल को स्थानीय हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषा मे प्रत्येक माह साहित्य प्रकाशित कर किसानों तक पहुँचाया जाए। परियोजना समन्वयकों का आवाह्न करते हुए सभी निदेशक अटारी को सुनिश्चित करना होगा कि वे कृषि विश्वविद्यालयों एवं आई.सी.ए.आर. संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करते हुए। इस

परियोजना में ग्राम स्तर पर किसानों को जोड़ें एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं को भी इस योजना से जोड़ते हुए अन्य किसानों को भी लाभान्वित करें। महानिदेशक ने ग्राम वासियों, विद्यार्थियों, राबे के विद्यार्थियों एफ.पी.ओ. (किसान उत्पादक संगठन) सभी मिलकर किसानों की आय बढ़ाने में समर्पण भाव से कार्य करें। वर्तमान समय में प्रवासी मजदूरों को भी इस परियोजना से जोड़कर आय संवर्धन के कार्यक्रम में सहायता की जानी चाहिए। किसानों की आय दोगुनी करने हेतु कृषि में स्थायित्व की क्या रणनीति होगी। उस पर वैज्ञानिकों को जिम्मेदारी लेनी होगी तभी किसानों की दुगनी आय 2022 तक प्रधानमंत्री जी के सपने को साकार किया जाना सम्भव होगा।

उपमहानिदेशक, भा.कृ.अनुप.–नई दिल्ली, डा. ए.के. सिंह ने परियोजना की रूप रेखा पर विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि विभिन्न आई.सी.ए.आर. संस्थाओं के माध्यम से इस परियोजना में सालाना 10 करोड़ रूपये व्यय किये जा रहे हैं। परियोजना अन्तर्गत 114 गाँव में प्रतिगाँव 50 किसान परिवारों का चयन कर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। लगभग 250 गाँव में प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन माडल, फसल अवशेष प्रबन्धन माडल, एकीकृत कृषि प्रणाली माडल आदि से अच्छे नतीजे देखे गये हैं। उन्होंने इस परियोजना का संचालन निदेशक अटारी के नेतृत्व में आई.सी.ए.आर. संस्थाओं, कृषि विश्वविद्यालय, शोधकर्ताओं आदि के बीच बेहतर समन्वय से अच्छी उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

इस अवसर पर भा.कृ.अनुप. अटारी लुधियाना एवं जोधपुर से सम्बद्ध भा.कृ.अनुप. संस्थाओं ने परियोजना के कार्यकलापों का प्रस्तुतिकरण किया। साथ ही साथ विभिन्न संस्थाओं में संचालित परियोजनाओं से जुड़े प्रमुख अन्वेषकों ने समीक्षा कार्यशाला में प्रस्तुतिकरण किया। किसान प्रतिनिधि क रूप में श्री महेन्द्र सिंह, ग्राम रसीना जिला कैथल हरियाणा ने भी अपने विचार रखे। डा. राजवीर सिंह, निदेशक अटारी लुधियाना एवं डा. एस. के. सिंह, निदेशक अटारी जोधपुर ने अपने जोन की उपलब्धियों पर चर्चा में भाग लिया। डा. अनीता कुमारी, प्रधान वैज्ञानिक एफ.एफ.पी., सी.पी.सी.आर.आई. कसारागोड़, डा. आर. राय बर्मन, प्रधान वैज्ञानिक, एफ.एफ.पी., आई.ए.आर.आई. नई दिल्ली एवं डा. परवेन्दर शेरॉन, प्रधान वैज्ञानिक, एफ.एफ.पी., सी.एस.एस.आर.आई. करनाल ने परियोजना से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श किया।

कार्यक्रम के अन्त में डा. केशव कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनुप.–नई दिल्ली ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

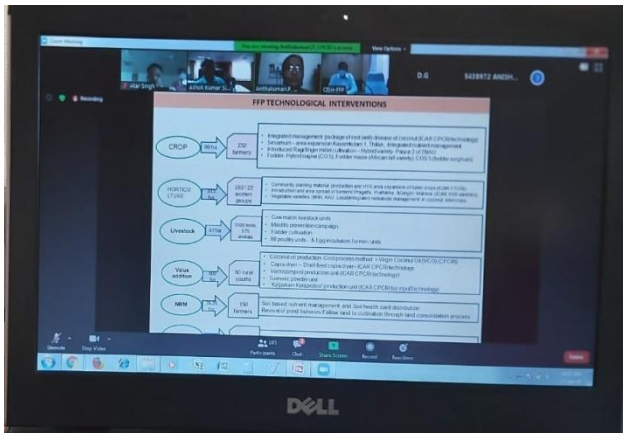
FFP TECHNOLOGICAL INTERVENTIONS
CROP
Livestock
NRM

Models of Institutional/Partnership building
Department of Horticulture (Solar fencing, mushroom, planting material)
Department of Agriculture (Inputs and various schemes)
Department of Forest (Fodder trees plantation)
Farmer FIRST Programme of ICAR
Department of Rural Development and Panchayati Raj
SJVN Ltd (For HRD of farmers)
m Kisan portal of GOI

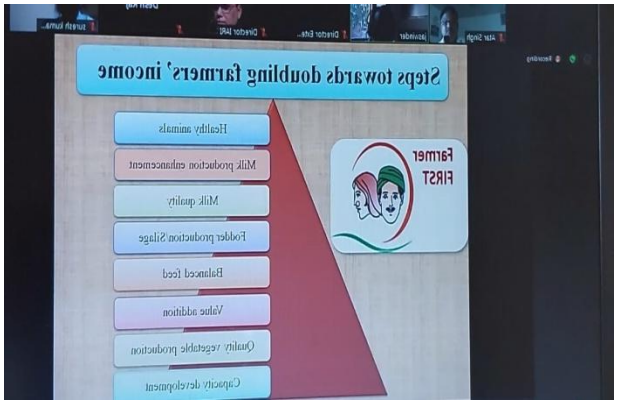
Steps towards doubling farmers' income
Farmer FIRST

Modules:
1. Reproduction Management in Dairy Animals/Assisted Reproductive Technology
2.Therapeutic and Preventive Strategies for Mastitis control in Dairy Animals
3. Integrated Farming System
4. Value addition of milk and milk products and better market linkages
Location:
ICAR-CIRC

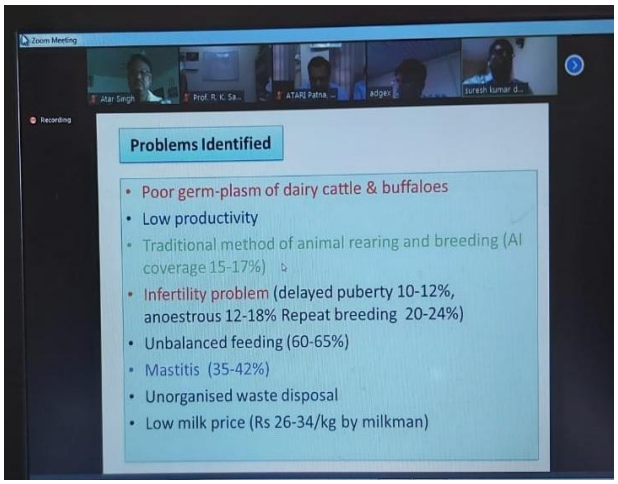
Problems Identified
Poor germ-plasm of dairy cattle & buffaloes
Low productivity
Traditional method of animal rearing and breeding (AI coverage 15-17%)
Infertility problem (delayed puberty 10-12%, anoestrous 12-18% Repeat breeding 20-24%)
Unbalanced feeding (60-65%)
Mastitis (35-42%)
Unorganised waste disposal
Low milk price (Rs 26-34/kg by milkman)

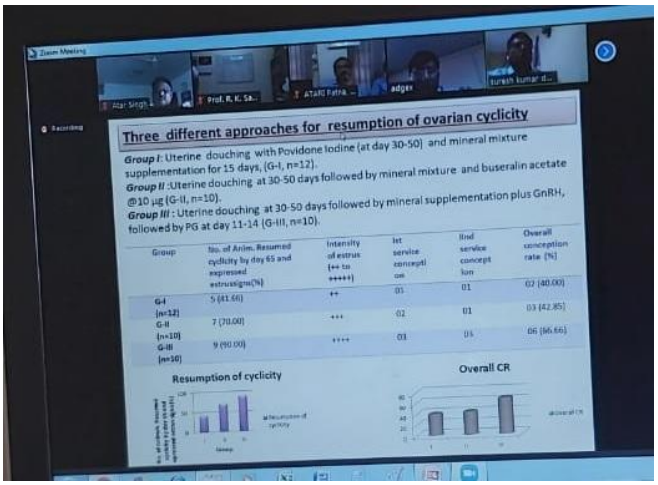
Three different approaches for resumption of ovarian cyclicity
Group I: Uterine douching with Povidone Iodine (at day 30-50) and mineral mixture supplementation for 15 days, (G-I, n=12).
Group II :Uterine douching at 30-50 days followed by mineral mixture and buserelin acetate @10 µg (G-II, n=10).
Group III : Uterine douching at 30-50 days followed by mineral supplementation plus GnRH, followed by PG at day 11-14 (G-III, n=10).
Resumption of cyclicity
Overall CR